तो, मोदी की जय हो.....

लो बन जाता हूं मैं भी एक अच्छा नागरिक,
तो, मोदी की जय हो,
अंकित गर्ग की जय हो,
चिदम्बरम की जय हो,

मैं कहूँगा,
मुसलमान गद्दार हैं,
आदिवासी नक्सली हैं,
दलित कामचोर और गंदे होते हैं,
अमीर अपनी मेहनत से अमीर बने हैं,
गरीब अपने आलस के कारण गरीब हैं,

तो बोलो, गुजरात के विकास की जय हो,
सलवा जुडूम की जय हो ,
पाकिस्तान को मिटा दो,
कश्मीरियों को उड़ा दो,
गुजरात जैसा सबक सारे देश के
मुसलमानों को पढ़ा दो,
सेक्युलरिस्ट बुद्धीजीवियों को जेलों में सड़ा दो,

बाबा रामदेव, आसाराम बापू की जय हो,
त्रिशूल की जय हो,
गोडसे की जय हो,

ब्राम्हणों के शुद्ध वंश की जय हो,
टाटा की जय हो, अम्बानी की जय हो
फौज की जय हो,
पुलिस की जय हो,
सरकार की जय हो,

औरतो को सिर चढाने वाले,
मुसलमानों के सामने हाथ जोड़ने वाले,
नक्सलियों के एजेंट,
साले बुद्धिजीवियों को सबक सिखा दो,

भाजपा को वोट दो,
संघ से संस्कार सीखो,
सच्चे भारतीय बनो,
गो मूत्र पियो,
मुंह पर गाय का गोबर मलो
राम मंदिर के निर्माण के लिये
खुल कर सहयोग करो,

मोदी को प्रधान मंत्री
बनाए रखने की
मुहिम से जुड़ें
और हमारी तरह
देश के अच्छे नागरिक बने।

. हिमांशु कुमार

नोट . हिमांशु कुमार पालमपुर में संभावना संस्थान चलाते हैं। उनकी फेसबुक प्रोफाइल के मुताबिक वह मुजफ्फरनगर के रहने वाले हैं।

शासकों ने प्रदूषण को बनाया लूट-कमाई का धंधा

दिल्ली (म.मो.) सरकार द्वारा बनाये गये नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एन जी टी) ने बढते प्रदूषण के नाम पर सरकार को एक और लूट का अवसर प्रदान कर दिया। एनजीटी के एक नये आदेश के अनुसार दिल्ली से होकर गुजरने वाले प्रत्येक भारी (कमर्शियल) वाहन से 500 से लेकर 1300 रुपये की वसूली की जायेगी। लूट की इस वसूली में कोई देरी न हो इसके लिये सुप्रीम कोर्ट ने भी अपनी मुहर एडवांस में ही लगा दी है। अब यह वसूली पहली नवम्बर से निर्बाध शुरू हो सकेगी।

देश भर की जनता बखूबी जानती है कि किस तरह से गत 20-30 वर्षों में शासकों ने प्रदूषण को अपनी लूट-कमाई का एक अच्छा खासा जरिया बना लिया है। प्रत्येक राज्य में प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड बने। इनका चेयरमैन बनने के लिये करोड़ों की बोली लगती है। करोड़ों देकर बना चेयरमैन अरबों कमाने के लिये ज़िला स्तर पर अधिकारियों के रूप में अपने एजेंट नियुक्त करता है। इन सबका प्रदूषण नियन्त्रण से कोई लेना-देना नहीं रहता; सबका लक्ष्य रहता है लूट और केवल लूट। दिल्ली से गुजरने वाले वाहनों पर इस अतिरिक्त टैक्स का क्या औचित्य हो सकता है? क्या इससे मिलने वाली रकम से सरकार प्रदूषित वायुमंडल को धो-पोंछ कर साफ़ करेगी? कदापि नहीं, यह संभव ही नहीं। इस टैक्स के पीछे सरकारी उद्देश्य यह बताया जा रहा है कि दिल्ली से होकर अन्य राज्यों को जाने वाले वाहन दिल्ली की अपेक्षा कहीं और से जायें। कहीं और से-चांद पर से तो होकर जाने से रहें; जायेंगे तो इन्हीं सड़कों से। दिल्ली से न सही हरियाणा से। हरियाणा से जाने का मतलब दो से तीन गुणा लम्बा रास्ता तय करना और वह भी टूटी फूटी सड़कों से। जाहिर है इस कवायद में डीजल भी तीन-चार गुणा अधिक लगेगा जिससे प्रदूषण और ज्यादा बढेगा, दिल्ली में न सही हरियाणा में। तो क्या यह समझा जाय कि दिल्ली में बैठे सरकार चलाने वालों को केवल अपनी ही चिन्ता है? प्रदूषण के नाम पर लूट कमाई की ओर ध्यान देने की अपेक्षा सरकारों ने यदि प्रदूषण के कारणों को दूर करने का प्रयास किया होता तो आज यह दुर्दशा न हुई होती। तीसियों बरस पहले बन जाने वाले पश्चिमी (केएमपी) व पूर्वी पेरिफ़ेरियल सड़कें यानी दिल्ली के बाईपास यदि चालू हो जाते तो आज यह समस्या न खड़ी होती। गत 10-12 वर्षों से निर्माणाधीन के एम पी बाईपास अभी कम से कम 2 साल और लेने वाला है जबकि पश्चिमी यानी गाज़ियाबाद-नौयडा-पलवल का काम अभी ढंग से शुरू भी नहीं हुआ है।

दिल्ली में प्रदूषण एवं आबादी का दबाव कम करने के लिये बने एनसीआर बोर्ड ने आज तक घोषणाओं के सिवाय कोई काम नहीं किया। सौ-सौ किलोमीटर से हर छोटे-मोटे इलाज के लिये मरीज़ों को दिल्ली भागना पड़ता है। अकेले हरियाणा के करीब 30-40 हज़ार बच्चे दिल्ली के विभिन्न कॉलेजों में पढते हैं। पलवल-फ़रीदाबाद से दिल्ली को जाने वाली रेलवे शटल सेवा अक्सर बंद रहती है। दिल्ली से ट्रेन या हवाई जहाज पकड़ने के लिये, सार्वाजनिक परिवहन के अभाव में, न चाहते हुए भी निजी वाहनों का प्रयोग करना पड़ता है। सरकार द्वारा शुरू की जाने वाली इस नई लूट कार्यवाही से डीज़ल की खपत और प्रदूषण तो बढेगा ही साथ में माल भाड़े का खर्च बढने से मंहगाई भी बढेगी। इसका सीधा बोझ आम जनता पर पड़ना तय है।

मुनाफ़ाखोरी लील गई, डॉक्टरी पेशे की पवित्रता

मैं कुच्छ दिन पहले एक क्लीनिक में गयी थी। वहां पेसेंट के साथ डॉक्टर के चेम्बर में गयी, तो वहां सामने एक बोर्ड पर लिखा था। भगवान की यह कैसी विडम्बना है कि मेरी जीविका किसी दूसरे के दुखों पर आश्रीत है। मैं इस शब्द को पढकर कुछ देर तक सोचती रही कि ये इतना बड़ा चिकित्सक है और इस तरह का शब्द यहां क्यों लिखा है। यह तो कितने को नई जिंदगी देता है। फ़िर सोची कि इसी तरह पेसेंट के ध्यान को दूसरे तरफ़ खींचने के लिये ऐसा कह रहा है।

चिकित्सक को समाज में भगवान का दूसरा रूप माना जाता है, लेकिन आज कितने ही डॉक्टर हैं जिन्हें कुच्छ पैसे के लालच में अजन्मी बच्चियों की हत्या करने में ज़रा भी संकोच नहीं होता। जेल में फ़ांसी देने का काम करने वाले एक कलकत्ता के जल्लाद ने अपने साक्षात्कार में कहा था कि जब किसी को फ़ांसी देने का हुक्म आता है तो मैं बहुत परेशान हो जाता हूं और कई दिनों तक मैं खाना नहीं खाता हूं। बहुत मुश्किल से अपने को यह समझा पाता हूं कि इस व्यक्ति ने बहुत जघन्य अपराध किया है इसलिये हमारा काम जायज है। लेकिन जिस बच्ची ने अभी तक इस दुनिया में आंख भी नहीं खोली उसने इंसानियत के खिलाफ़ क्या अपराध किया है? क्या लड़की होना ही उसका अपराध है? जाने किस पत्थर का कलेजा रखते हैं वे लोग। इस मामले में डॉक्टर भी उतना ही दोषी हैं जितना वो आनेवाली बच्चे के माता-पिता हैं। सोच कर देखा जाय कि वही लड़की 4-5 महीने बाद, अगर वही भ्रुण लड़की के रूप में जन्म लेकर इस दुनिया में आती और फ़िर उसी डॉक्टर को उसी लड़की की हत्या करने को कहा जाय तो क्या वह ऐसा कर सकता है? इस मामले में डॉक्टर भी उतना ही दोषी है जितना कि उस जन्म लेने वाली बच्ची के इज्जतदार माता पिता जो अपनी ही संतान की हत्या का ठेका देते हैं।

किसी भी महिला की ये मज़बूरी होती है कि वह लड़की पैदा करने का। उसका और उसके ससुरालवालों उसका तंग करने लगते हैं। सोचने की बात है कि जब वही बच्ची पैदा होती है तो मां उसके लिये क्या कष्ट नहीं सहती। वही बच्ची बाद में अपनी मां के लिये जान से भी ज्यादा प्यारी हो जाती है। मां कितना कष्ट सहकर अपने बच्चे को हर तरह से पाल-पोस कर बड़ी करती है। जब एक दिन वही बेटी दूसरे के घर सादी होकर जाती है और लड़की अपनी ससुराल में खुशी से रहती है तो माता पिता के लिये चिन्ता का विषय नहीं रहता है। जब उसका परिवार और पति

चिकित्सक को समाज में भगवान का दूसरा रूप माना जाता है, लेकिन आज कितने ही डॉक्टर हैं जिन्हें कुच्छ पैसे के लालच में अजन्मी बच्चियों की हत्या करने में ज़रा भी संकोच नहीं होता। जेल में फ़ांसी देने का काम करने वाले एक कलकत्ता के जल्लाद ने अपने साक्षात्कार में कहा था कि जब किसी को फ़ांसी देने का हुक्म आता है तो मैं बहुत परेशान हो जाता हूं और कई दिनों तक मैं खाना नहीं खाता हूं।

ठीक नहीं रहता है तो वो भी माता पिता के लिये एक समस्या बन जाती है। लड़की को भी किसी तरह का कोई कष्ट होता है तो वो सबसे पहले अपनी मां की ही याद करती है। बच्चे के मुंह से यही शब्द निकलता है मां। बच्चे कितने भी बड़े हो जाये सबसे पहले उनकी जुबान पे मां शब्द ही आता है।

एक तरफ़ स्त्री को सरस्वती, देवी, लक्ष्मी के रूप में ज्ञान व विद्या का श्रोत मानते हैं और उसके दिये हुए ज्ञान से लाखों 'सरस्वतियों' की हत्या करते हैं। माता-पिता और डॉक्टर अपने ठण्डे दिमाग से सोच-समझकर देखें कि ये हत्याऐं इंसानियत के खिलाफ़ अपराध नहीं है। इंकलाब तो दूर, आज हमारे बीच इस सामाजिक बुराई के खिलाफ़ लड़ने वाला कोई राजा राममोहन राय भी नहीं दिखाई देता, जिन्होंने आज से 150 साल पहले 'सती प्रथा' जैसे परंपरा के खिलाफ़ संघर्ष कर उसको खत्म करवाया था। कन्या भ्रुण हत्या समस्या के समाधान की हम किससे उम्मीद कर सकते हैं। क्या उन धर्म गुरूओं से जिनकी छत्र-छाया में सैंकड़ों वर्षों से स्त्री का शोषण होता आया है? या भ्रष्टाचार में डूबे राजनेताओं से हम इस समस्या के समाधान की उम्मीद कर रहे हैं जो केवल चुनाव आने पर हमें अपना चेहरा दिखाते हैं और संसद में बैठकर आम जनता के खिलाफ़ षड्यंत्र रचते रहते हैं।

-नीलिमा

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब